जयपुर जिले की चौमूं तहसील में जनसंख्या दबाव एवं जल संसाधन

अजय यादव

सारांश

मानव प्रारम्भिक काल से ही जल संसाधन का उपयोग प्राथमिकता से करता आ रहा है। जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ जल संसाधनों के उपयोग में परिवर्तन होने लगा। शोध का अध्ययन क्षेत्र चौमूं तहसील है, जो राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले में स्थित तहसील है। चौमूं तहसील में 2001 में कुल जनसंख्या 3,26,488 थी तथा 2011 में जनसंख्या 3,95,009 हो गयी है। जिसका वितरण चौमूं तहसील के सभी गांवों में समान नही है क्योंकि जनसंख्या वितरण पर उच्चावच, जलवायु, मिट्टी, धरातल, जलापूर्ति, आर्थिक संसाधन (परिवहन, खनिज), सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कारक प्रभावित करते हैं। चौमूं तहसील के पूर्वी, दक्षिणी तथा मध्यवर्ती भाग में जनसंख्या का अधिकतम भाग पाया जाता है। चौमूं कस्बे में नगरीय सुविधाओं के कारण सघन जनसंख्या निवास करती है। पश्चिमी भाग में भू–जल स्तर का अधिक गहराई पर पाया जाना तथा कुल मात्रा में कमी, अर्द्धशुष्क जलवायु दशाओं का विस्तार मध्यम उपजाऊ बलुई मिट्टी आदि के कारण कम जनसंख्या पाई जाती है। किसी क्षेत्र विशेष के सन्तुलित विकास के लिये जल संसाधनों का यथोचित उपयोग होना आवश्यक है। चौमूं तहसील में वर्ष 2009 में कुल भूमिगत जल की उपलब्धता 42.27 एम. सी. एम. थी।

संकेत शब्द–संसाधन, उच्चावच, जलवायु, आर्थिक संसाधन, सामाजिक–सांस्कृतिक, अर्द्धशुष्क जलवायु।

चौमू तहसील राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में विस्तृत जयपुर जिले में स्थित तहसील है। जयपुर जिले के मध्य–उत्तरी भाग में स्थित चौमू तहसील उत्तर में सीकर जिले के साथ जयपुर–सीकर जिले की सीमा का निर्माण करती है। सीकर जिले की श्रीमाधोपुर तहसील चौमू तहसील के उत्तर में स्थित है। इस सीमा पर चौमू के किशनपुरा, सिरसा, नांगल–गोविन्द, खेजरोली आदि गांव अवस्थित हैं। चौमू तहसील के उत्तर पूर्व में जयपुर जिले की शाहपुरा तहसील स्थित है। चौमू तहसील के दक्षिण पूर्व भाग में आमेर तहसील स्थित है। इस सीमा पर चौमू तहसील के जाटावाली, चीथवाडी, अनन्तपुरा, जैतपुरा गांव स्थित हैं। चौमू के पश्चिमी भाग में जयपुर जिले की सांभर तहसील स्थित है। इस प्रकार जयपुर जिले में चौमू तहसील की स्थिति अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

चौमू तहसील में 2001 में कुल जनसंख्या 3,26,488 थी तथा 2011 में जनसंख्या 3,95,009 हो गयी है। जिसका वितरण चौमू तहसील के सभी गांवों में समान नही है क्योंकि जनसंख्या वितरण पर उच्चावच, जलवायु, मिट्टी, धरातल, जलापूर्ति, आर्थिक संसाधन (परिवहन, खनिज), सामाजिक–सांस्कृतिक आदि कारक प्रभावित करते हैं। चौमू तहसील के पूर्वी, दक्षिणी तथा मध्यवर्ती भाग में जनसंख्या का अधिकतम भाग पाया जाता है। चौमू कस्बे में नगरीय सुविधाओं के कारण सघन जनसंख्या निवास करती है। पश्चिमी भाग में भू–जल स्तर का अधिक गहराई

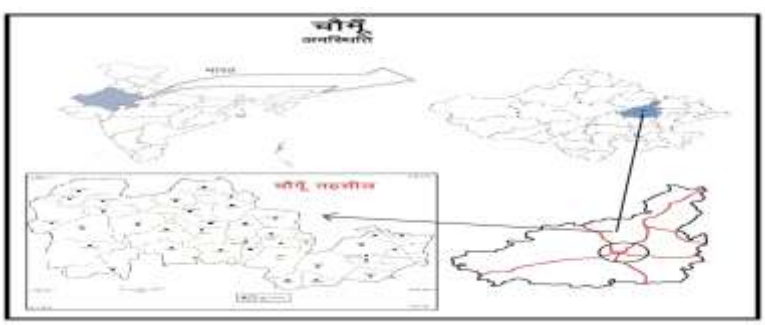

चित्रः अध्ययन क्षेत्र अवस्थिति

पर पाया जाना तथा कुल मात्रा में कमी, अर्द्धशुष्क जलवायु दशाओं का विस्तार मध्यम उपजाऊ बलुई मिट्टी आदि के कारण कम जनसंख्या पाई जाती है।

सारणी 1: चौमू तहसील में जनसंख्या वृद्धि (1991–2011)

वर्ष	वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1991	33.45
2001	29.15
2011	30.8

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, 1991,2001,2011, राजस्थान।

आरेख 1 : अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि दर

वर्तमान में शिक्षा एक आधारभूत सुविधा है जिसके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। जिस प्रकार मस्तिस्क के बिना जीवन नहीं उसी प्रकार शिक्षा के बिना शिक्षा के बिना व्यक्ति का वर्तमान युग में कोई महत्व नही है। शिक्षा की दृष्टि से चौमू तहसील में विगत दशक में क्रान्तिकारी परिवर्तन आये हैं। 2001 में जहां राजस्थान की साक्षरता 61.03 प्रतिशत थी, वहीं चौमू तहसील की 67.08 प्रतिशत थी लेकिन यह जयपुर की कुल साक्षरता 70.63 प्रतिशत से अभी भी कम ही थी।

सारणी 2: चौमू तहसील में साक्षरता की स्थिति (2001)

	कुल साक्षरता			ग्रामीण साक्षरता			शहरी साक्षरता		
	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला	कुल
जयपुर	83.58	56.18	70.63	79.96	44.42	62.96	87.03	67.89	78.09
चौमू	84.68	57.68	67.08	83.67	47.39	66.24	89.92	59.11	75.30

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, 2001, राजस्थान।

वर्षा जल

वर्षा जल एक अनमोल प्राकृतिक उपहार है जो प्रतिवर्ष लगभग पूरी पृथ्वी को बिना किसी भेदभाव के मिलता रहता है, परन्तु समुचित प्रबंधन के अभाव में वर्षा जल व्यर्थ में बहता हुआ नदी, नालों में होता हुआ समुद्र के खारे पानी में मिलकर खारा बन जाता है। अतः वर्तमान जल संकट को दूर करने के लिए वर्षा जल संचय ही एकमात्र विकल्प है। यदि वर्षा जल के संग्रहण की समुचित व्यवस्था हो तो न केवल जल संकट से जूझते शहर अपनी तत्कालीन जरूरतों के लिए पानी जुटा पाएंगे बल्कि इससे भूजल भी रिचार्ज हो सकेगा। अतः शहरों के लिए जल प्रबंधन में वर्षा जल ही हर बूंद को सहेजकर रखना जरूरी है। हमारे देश में प्राचीनकाल से ही जल संचय की परम्परा थी तथा वर्षा जल का संग्रहण करने के लिए लोग प्रयास करते थे।

वर्षा जल किसी भी प्रदेश के जल संसाधनों में सर्वोपरी स्थान रखता है। चौमूँ तहसील में पिछले दशकों में हुई वर्षा के आंकलन से स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में वर्षा की अनियमितता है। किसी वर्ष वर्षा का स्तर 500 मिलीमीटर से अधिक तथा किसी वर्ष 500 मिमी. से कम रहा है।

सारणी 3: अध्ययन क्षेत्र में वर्षा जल

वर्ष	वर्षा (मिलीमीटर में)
2001	503.80
2002	214.0
2003	581.0
2004	296.0
2005	306.0

2006	209.0
2007	323.0
2008	424.0
2009	268.0
2010	735.0
औसत	385.0

स्त्रोतः भारतीय मौसम विभाग, नई दिल्ली।

आरेख 2 : अध्ययन क्षेत्र में वर्षा जल

अध्ययन क्षेत्र में पिछले दशक में औसत वर्षा 385.0 मिलीमीटर रही है। जिसमें वर्ष 2001, 2003 और वर्ष 2010 में वर्षा 500 मिलीमीटर से अधिक रही है, शेष वर्षों में वर्षा 500 मिलीमीटर से कम ही रही है। अतः अध्ययन क्षेत्र में वर्षा जल संसाधन की दृष्टि से अधिक कारगर नहीं हैं।

सिंचाई के काम आने वाले जल संसाधन

सिंचाई में जल संरक्षण की उपयोगिता (वर्षा जल) कृषि की कल्पना बिना वर्षा जल के नहीं की जा सकती है, क्योंकि कृषि का आधार ही वर्षा का जल है। जिस समय मानसून सक्रिय नहीं होता है उस समय अकाल की स्थिति स्थापित हो जाती है और वह हमारी कृषि व्यवस्था को प्रभावित करती है। इसी समस्या का निदान करने के लिए वर्षा जल संरक्षण को सरकार द्वारा उसका उपयोग सिंचाई व्यवस्था में किया जा सकें।

सारणी 4: अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई जल संसाधन

साधन	संख्या
ट्यूब वैल (नलकूप)	15381
पम्पिंग सेट	13634

स्त्रोतः कार्यालय, जिला कलक्टर, जयपुर।

अध्ययन क्षेत्र चौमूँ तहसील में वर्ष 2013–14 में नलकूपों की संख्या 15381 थी तथा दूसरी ओर पम्पिंग सेट की संख्या 13634 थी। ये संसाधन अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई के लिये ही उपयोग में लिये जाते हैं।

जयपुर में वाटर इंस्टीट्यूट की स्थापनाः–

जल प्रबन्धन के विभिन्न आयामों के लिए एक जल संस्थान की स्थापना जयपुर में की गई है। भारतीय उद्योग महासंघ व राजस्थान सरकार के संयुक्त प्रयास से स्थापित इस इंस्टीट्यूट में रेन वाटर हार्वेस्टिंग एवं वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट आदि कार्य सम्पादित किए जाएंगे।

शोध छात्र, भूगोल विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सन्दर्भः

- Surya, K. 1987. A Spatial Perspective on District Administration in Rajasthan, A, Vol. VII, pp. 109-115.
- Roy, M. and Wojtczak, A. (2009) : Global minimum essential requirements: a road towards competence-oriented medical education, Institute for International Medical Education, White Plains, New York. pp. 125-129
- Sharma, R.N. 2010. Socio-Economic Development in Chittorgarh District of Rajasthan, A, Vol. XXVII, pp. 76-80.
- Sinha, S. and Baraik, V.K. 1998-1999. Disparities in the Levels of Development in Bihar, 1961-1991, A,

Vol. XV-XVI, pp. 51-70.

- Taffe, E.L. and Gautir, H.L. 1973. Geography of Transportation, Prentice Hall, England.
- Statistical Abstract of Rajasthan 2013-14. Government of Rajasthan, Jaipur
- आर्थिक समीक्षा 2013–14, राजस्थान सरकार, जयपुर
- आर्थिक समीक्षा 2014–15, राजस्थान सरकार, जयपुर
- प्रतिवेदन जनगणना विभाग 2011, भारत सरकार, जनगणना विभाग, जयपुर